

विश्व पर्यावरण दिवस कार्यक्रम

विश्व पर्यावरण दिवस पर भा कृ अनु प- केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सी एम एफ आर आइ), कोची ने दिनांक 5 जून, 2021 को "पारितंत्र की पुनःस्थापना-मैंग्रोव और इसकी संभावनाएं" विषय पर वेबिनार आयोजित किया। वेबिनार में मैंग्रोवों पर काम कररत विशेषज्ञों ने यह सूचित किया कि समुद्री अपरदन और तटीय बाढ़ के बाद होनेवाले उच्च लहरों को रोकने के लिए जैव ढाल के रूप में मैंग्रोव काम कर सकता है। विशेषज्ञों ने तटीय जैवविविधता का पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने के लिए मैंग्रोव वनरोपण पर जोर देते हुए तटीय वनस्पति की पुनःस्थापना का आह्वान किया।

हाल ही में, पूरा केरल तट समुद्र के प्रकोप से टौटे और यास नामक दो चक्रवातों से प्रभावित हो गया था। विशेषज्ञों के अनुसार 'स्टॉर्म सर्ज' (storm surge) चक्रवातों के द्वारा खतरनाक हवाओं से बनी घटना है जो तटीय गाँवों में ऊंची लहरें, समुद्री कटाव और बाढ़ का कारण बनती है। उनके अनुसार हिन्द महासागर में पानी की तेज गर्मी से भविष्य में केरल तट पर ओर अधिक तूफान होने की संभावना है।

डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, सी एम एफ आर आइ ने कहा कि निर्माण सहित कई कारणों से बिगड़ रहे तटीय जैवविविधता का संरक्षण ही समुद्री विक्षोभ से तटीय लोगों का जीवन बचाने का अच्छा दीर्घ कालिक प्राकृतिक विकल्प है। उन्होंने कहा कि हाल ही में मुंबई

के तटीय क्षेत्र में किए गए निरीक्षण के आधार पर किया गया अध्ययन यह प्रकट करता है कि तटीय लहरों और तूफानों से मैंग्रोव संरक्षण करता है।

डॉ. एन. वासुदेवन, आइ एफ एस, वन विकास निगम का प्रबंधक निदेशक, महाराष्ट्र वेबिनार के मुख्य अतिथि रहे। श्री पी. पी. प्रमोद, आइ एफ एस, मुख्य संरक्षक, वन पूर्वी सर्कल और संरक्षक, निहित वन, केरल सम्मानीय अतिथि रहे। डॉ. आर. रामसुब्रह्मन्यन, एम एस स्वामिनाथन अनुसंधान संस्थान (एमएसएसआरएफ) के तटीय प्रणाली अनुसंधान का कार्यक्रम निदेशक, चेन्नई ने मुख्य भाषण दिया।

वेबिनार में यह सिफारिश की गयी कि केरल तट में तटीय वनस्पति की पुनःस्थापना के लिए सार्वजनिक सहयोग से सामाजिक वानिकी परिकल्पना का आयोजन किया जाना चाहिए। मैंग्रोव वनीकरण के संभावित क्षेत्रों की पहचान के लिए व्यवहार्यता अध्ययन की आवश्यकता का प्रस्ताव रखा गया। वेबिनार में क्षेत्र के निवासियों की सुरक्षा के उद्देश्य से तट के साथ जैव-हरित पट्टी बनाने के लिए विभिन्न हितधारकों के बीच जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करने का भी सुझाव दिया।

इसके अतिरिक्त, वेबिनार में तटीय निवासियों और हितधारकों की आजीविका में लाभ प्राप्त करने हेतु मैंग्रोवों को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश विकसित करने का प्रस्ताव रखा गया।



डॉ. पी कलाधरन, प्रधान वैज्ञानिक, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, डॉ. ग्रिन्सन जोर्ज, वरिष्ठ कार्यक्रम विशेषज्ञ (मात्स्यिकी), एस ए ए आर सी कृषि केंद्र (एस ए सी), ढाका, बंगलादेश, डॉ. के. विनोद, प्रधान वैज्ञानिक, भा कृ अनु प- सी एम एफ आर आइ और डॉ. रतीश कुमार आर., वैज्ञानिक, भा कृ अनु प- सी एम एफ आर आइ ने वेबिनार में भाषण दिए।